फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 359 मई 2018

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

वेस्ट और भोजन के बीच

ऊ-ऊ-ऊ-ऊ-ऊ! ताऊ थोड़ा कम दबाओ। बहुत दर्द हो रहा है।

तेरे पैर के तलवे में बहुत क्रिस्टल जमा हो रखे हैं।

क्रिस्टल? यह कहाँ से आये?

यह शरीर के अपशिष्ट हैं। पसीना, पेशाब, टट्टी, साँस, रक्तस्राव द्वारा शरीर अपने अन्दर की वेस्ट चीजों को निकालता रहता है। और जो रह जाती हैं वो तरह-तरह से शरीर में जम जाती हैं। मैं पैर के तलवे में इन्हें देखता हूँ और हटाने की कोशिश करता हूँ। और यह जो दर्द हो रहा है यह उस वेस्ट को पिघलाने की प्रक्रिया है।

उँ-उँ-ओह-उँ! ताऊजी हमारे समाज में वेस्ट को ले कर समझ और क्रियाओं में बहुत प्रोब्लम हैं।

क्या प्रोब्लम है?

महसूस तो सब कोई कर लेते हैं। सोच नहीं पाते। यह बहुत गहरी गुत्थी है। यह बहस में आयेगी तो बहुत-सी गाँठें खुल जायेंगी। टट्टी के बारे में आप सोचो तो देख पाओगे कि कितने पर्दों में क्रूरता छिपी है। जो स्वाभाविक है उस पर ही बहुत पर्दे डाले हुये हैं।

फैक्ट्रियों में टॉयलेट पर सोच कम, और टॉयलेट जाने पर पाबन्दियाँ ज्यादा हैं।

जो स्वाभाविक है, सब से है, उसे सिकोड़ कर कुछ पर थोप कर सोच से बाहर कर रखा है।। ऊँ-ऊँ-ऊँ!

ई एस आई अस्पताल की ओखला में जो बिल्डिंग है उस से सटा है शहर के कूड़े का पहाड़।

सब ने देखा है। उस पर काम करते हुये शरीर भी देखे हैं, और अस्पताल में उस की हवा को लेते हुये बीमार शरीर भी देखे हैं। जितना वास्तविक रूप में विशाल, उतना सोच में गायब।

तेरे पैर के तलवे देख कर लग रहा है कि बहस तो खाने पर भी गायब है। तू खाता क्या है? अच्छा खायेगा तभी तो अच्छा हगेगा। पेट साफ रहेगा। मन हल्का रहेगा।

ताऊ अब तो आप मजाक कर रहे हो। हमारे खाने का टाइम और जगह अनिश्चित हैं। क्वालिटी भी अनिश्चित ही कह लें।

सुनो। उमर हो चुकी है मेरी। बच्चे छोटे थे तब इनकी कमाई से ही घर चलता था। खाना बनाने का टाइम था लेकिन ये कैन्टीन के खाने से इतने सन्तुष्ट रहते थे कि कभी सोचा ही नहीं कि घर से खाना ले जायेंगे। और आजकल मैं, मेरा बेटा, मेरी बेटी, सब नौकरी करते हैं। समय कम है और उस में खाना बनाने की भगदड़ रहती है। हम में से कोई कैन्टीन के भरोसे नहीं रहती।

ताई। ताऊ ने कुछ ज्यादा ही हाँका है क्या? ऐसा तो कुछ सुनने में आता ही नहीं है कि खाने की क्वालिटी पर इतना कन्ट्रोल था वरकरों का। ऊ-ऊ-ऊ! ताऊ गुस्से में दबा रहे हो क्या?

हा-हा-हा! अरे नहीं। सुन। हफ्ते में एक दिन अण्डा-करी, एक दिन मीट, एक दिन खीर-पूरी, एक दिन कढी-चावल और साथ में राजमा या दाल, सलाद, सब्जी, चार रोटी, चावल, और गाढा दही। अलग-अलग फैक्ट्री की कैन्टीन में खाने की क्वालिटी के बारे में चर्चायें होती थी। और कहीं बेहतरीन की बात सुनने में आती थी तो अपने यहाँ लागू करवाने के लिये दबाव डालते थे। अरे कभी-कभी तो मस्ती में कैन्टीन से समोसे, ब्रैड पकोड़े, और कभी चिकन घर ले जाते थे। अगर कैन्टीन में दाल पतली हुई तो गजब हँगामा।

ताऊ आप कह रहे हो कि भोजन की पौष्टिकता और खाने की क्वालिटी पर एक आम चर्चा थी जो अब कहीं धुँधली पड़ गई है।

मेरे ख्याल से धुँधली नहीं पड़ी है। यह कहीं सिकुड़ कर परिवार की जिम्मेदारी बन गई है। और, और सिकुड़ कर एक-एक व्यक्ति की कोशिश बन गई है। जो सार्वजनिक बहस होनी है उसके लिये जो सार्वजनिक खाने-पीने की व्यवस्था है उस पर उत्तेजना हो जो जीवन को एक दावत के तौर पर देखे।

खाने को ले कर पौष्टिकता बिना, सजे पकवानों के साथ-साथ भोजन के प्रति मायुसी व्यापक-सी लगती है।

यह कनेक्टेड है आपकी पहली बात से। वेस्ट के प्रति जो प्रवृति रही है वही अब भोजन को देखने में आ रही है। शादी के समय भोजन की दुर्गति भोजन और वेस्ट के बीच मानव शरीर को गायब होते दिखा रही है।

ताऊ बहुत आराम मिल रहा है। नींद-सी आ रही है। शायद सपनों में भोजन और वेस्ट ही छाये रहेंगे।

छाने दे। सपनों में सोच अंकुरित होती है।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद - 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कम्पलेन्ट की भाषा को जाने दो

यह साफ हो चुका है कि कार्यस्थलों की शिकायतों का कोई सरकारी समाधान नहीं है। श्रम विभाग, लेबर कोर्ट नब्बे प्रतिशत वरकरों के लिये खत्म हो चुके हैं। ऐसे माहौल में कम्पलेन्ट की पुरानी भाषा जिसमें एक सुनवाई की आशा होती थी उसको ले कर चलना आत्मघाती है। हरेक के पास हजार उदाहरण होंगे इसके। यह अरजेन्ट बन गया है कि जितनी जल्दी हो सके कम्पलेन्ट की भाषा को त्याग दिया जाये। स्वयं द्वारा तथा छोटे-बड़े समूहों द्वारा दबाव डालने के अनुभवों को शेयर करें और उन पर चर्चा करें। जो दवा एक्सपायर हो चुकी है उससे मोह मत करो।

✶ **गंगा ओवरसीज** (647-8 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, महीने के तीसों दिन। शिफ्ट बदलती ही नहीं, रात वाले लगातार रात में रहते हैं। मार्च में किये ओवर टाइम के पैसे 27 अप्रैल तक नहीं दिये थे। ई एस आई तथा पी एफ 100 वरकरों में से मात्र दो की हैं।

✶ **एग्रेसिव इलेक्ट्रोनिक्स** (264 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 150 टेम्परेरी वरकरों की तनखा से ई एस आई तथा पी एफ के दोनों हिस्से काटते हैं, हर महीने 2500 रुपये काटते हैं।

✶ **थॉमसन प्रैस** (बी-315 ओखला फेज-1, दिल्ली) में 50 परमानेन्ट मजदूर और 200 टेम्परेरी वरकर महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम करते हैं। परमानेन्टों को दुगुनी दर से और टेम्परेरी वरकरों को सिंगल रेट से पैसे। दिल्ली में 3 मार्च 2017 से लागू ग्रेड के पैसे अप्रैल में दिये और मई में काट लिये तो मजदूरों ने काम बन्द किया था। दे देंगे बोले थे और तब से दे देंगे-दे देंगे कहते झूठ बोलते हैं कि कोर्ट का स्टे लगा है।

✶ **शिवालिक प्रिन्ट्स** (21 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को भी ड्युटी। शिफ्ट बदलने के लिये शनिवार नाइट वाले 24 घण्टे ड्युटी करते हैं। नींद पूरी नहीं होती। बड़ी फैक्ट्री है, कम्प्युट्राइज्ड मशीनों पर निटिंग होती है, अधिकतर वरकर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। लन्च-ब्रेक और टी-ब्रेक में भी मशीनें चालू रहती हैं — मशीन पर ही खाना खाओ, चाय पीओ। कैन्टीन में भोजन नहीं बनता, सिर्फ चाय बनती है। और, 12 घण्टे में कम्पनी वरकरों को एक कप चाय भी नहीं देती। पिछले वर्ष तनखा बढवाने के लिये मजदूरों ने एक दिन सब मशीनें बन्द कर दी थी। उत्पादन बन्द हुये ढाई घण्टे हो गये तब साहब लोग बोले थे कि 6 प्रतिशत बढायेंगे। चार-पाँच महीने बढायेंगे-बढायेंगे कह कर निकाल दिये। फिर थोड़े-से वरकरों की ही तनखा बढाई है।

✶ **ऋचा और गौरव** समूह की उद्योग विहार गुड़गाँव तथा आई एम टी मानेसर स्थित सब फैक्ट्रियों में मजदूरों को महीने में तीन बार पेमेन्ट करते हैं। पहले तनखा बैंक खातों में भेजते हैं। फिर तीन-चार दिन बाद सिंगल रेट वाले ओवर टाइम के पैसे नकद देते हैं। और फिर दुगुनी दर से ओवर टाइम वाले पैसे बैंक खातों में भेजते हैं।

✶ **सिग्मा ऑटोमोटिव** (16 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 10 परमानेन्ट मजदूर और 300 टेम्परेरी वरकर हैं। प्रोडक्शन में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और क्वालिटी में 10 घण्टे की एक शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। टेम्परेरी में 150 को पे-स्लिप नहीं देते। ओवर टाइम के घण्टों में गड़बड़ी करते हैं। पी एफ नम्बर पता नहीं होने के कारण मजदूर नेट पर देख नहीं पाते कि फण्ड जमा करवा रहे हैं अथवा नहीं।

✶ **फैशन फैक्ट्री इन्टरनेशनल** (सी-68/1 ओखला फेज-2, दिल्ली) में लेदर के जैकेट बनाते 250 वरकरों में 30 की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। धागे काटती 50 महिला मजदूरों की तनखा 7000-8000 रुपये।

✶ **वी जी कौशिको** (126 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में मारुति सुजुकी के पार्ट्स बनते हैं। ओवर टाम के पैसे सिंगल रेट से। बड़ी फैक्ट्री है, 12 घण्टे की ड्युटी में कम्पनी एक कप चाय भी मजदूरों को नहीं देती।

✶ **गैलेक्सी वॉग** (115 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में महीने में 52 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और 100 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। पे-स्लिप में ओवर टाइम नहीं दिखाते और नकद देते हैं। तनखा देरी से, मार्च की 14 अप्रैल को बैंक खातों में भेजी। और मार्च में किये ओवर टाइम के पैसे 27 अप्रैल तक नहीं दिये थे।

✶ **लिवप्यूअर वाटरप्यूरिफायर** (39 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मोल्डिंग विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं लेकिन ओवर टाइम प्रतिदिन 3 घण्टे का ही देते हैं। लन्च-ब्रेक तथा दो टी-ब्रेक का एक घण्टा काट लेते हैं। और, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम — ऑपरेटर को 39 रुपये प्रति घण्टा तथा हैल्पर को 34 रुपये प्रति घण्टा।

✶ **एयरटेक इलेक्ट्रोविजन** (बी-70 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री का यह नाम नवम्बर 2016 से है। इसके पहले नाम बेस्टन था। नये भर्ती की तनखा 8000-10,000 रुपये और इन में से ही ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं। बेस्टन के 10-12 वरकर अब भी फैक्ट्री में काम करते हैं पर उनकी ई एस आई तथा पी एफ बन्द कर दी हैं और उन्हें महीने के 13,500 रुपये देते हैं।

✶ नीलम-बाटा रोड़, फरीदाबाद स्थित **रोनाल्ड इन** (होटल) में काम करते 40 वरकरों में से 6-7 की ही ई एस आई तथा पी एफ है। तनखा देरी से, 17-18 तारीख को। **(बाकी पेज तीन पर)**

✶ **सान इन्टरनेशनल** (254 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में तबीयत खराब होने पर भी जबरन रोकते हैं। सुबह साढे नौ से रात 10 बजे तक रोज और महीने में 10-15 बार रात 1 बजे तक रोकते हैं।

नेताओं के फेर

✶ **वीयरवेल** (बी-134 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री मजदूरों ने 3 मार्च 2017 से लागू ग्रेड को लेने के लिये लगातार कोशिशें की हैं और कई तरीके अपनाये हैं।

इस सन्दर्भ में दिसम्बर 2017 के आखिरी हफ्ते में मैनेजमेन्ट ने नोटिस लगा कर 33 वरकरों का गेट रोका और पुलिस बुला ली। नेताओं को भुगत चुके यह मजदूर फिर एक यूनियन लीडर के फेर में पड़ गये।

नेता ने श्रम विभाग में केस किया। हफ्ते-हफ्ते पर तारीख पड़ी। आर्डर 1 मार्च को हुआ। रिकवरी सर्टिफिकेट 4 दिन बाद देने, हफ्ते बाद देने की बातें आई। यूनियन लीडर ने टालमटोल शुरू की। मिलने से इनकार किया। फाइल ले जाने को कहा। और फिर यूनियन लीडर बोला : नोएडा में 8000 रुपये में वरकर काम कर रहे हैं, तुम यहाँ 16,000 लोगे तो फैक्ट्री बन्द हो जायेगी।

बाहर किये 33 में से 5 मजदूरों ने नौकरी छोड़ दी।

3 मई को वीयरवेल मैनेजमेन्ट और यूनियन लीडर ने श्रम विभाग में समझौते पर हस्ताक्षर किये। जो 28 मजदूर बाहर बचे थे उनमें से 3 को ड्युटी पर नहीं लेने और बाकी को 4 मई से ड्युटी पर लेने की बातें लिखी हैं।

3 मई 2018 वाले मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते में 3 मार्च 2017 वाले ग्रेड का जिक्र तक नहीं है।

✶ **इण्डो ऑटोटेक** (132-133 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री 2009 से चालू है और इसमें एक भी मजदूर परमानेन्ट नहीं है। कानून अनुसार एक भी इण्डो वरकर यहाँ फैक्ट्री यूनियन का सदस्य नहीं बन सकता। लेकिन इधर दूसरी बार यूनियन लीडर इण्डो मजदूरों से फैक्ट्री यूनियन बनाने के नाम पर पैसे बटोर रहे हैं। एन एच 8 वाली **मार्क एग्जास्ट** फैक्ट्री की कहानी दोहराई जा रही है।

✶ **सोलर प्रिन्टिंग प्रैस** (डी-16/1 ओखला फेज-2, दिल्ली) को 25.7.2016 को मैनेजमेन्ट नोएडा ले गई। करीब 300 में से बीसेक वरकर नोएडा गये। बाकी सब मजदूर यूनियन लीडर की बातों में आ गये। नेता ने 5 से 25 वर्ष सर्विस वाले वरकरों के हिसाब के लिये केस डाला। बहुत तारीख पड़ चुकी हैं और तारीखें जारी हैं।

करना हमीं ने

✶ दिल्ली में 3 मार्च 2017 से लागू ग्रेड के लिये कार्यस्थलों पर मजदूर अनेक प्रकार के दबाव डाल रहे हैं। इस सिलसिले में **सोनू एग्जिम** (बी-5/3 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में सैम्पलिंग टेलरों तथा इम्ब्राइड्री वरकरों ने 16 अप्रैल को सुबह साढे नौ बजे फैक्ट्री में पहुँच कर काम शुरू नहीं किया। उत्पादन बन्द रहा तो 3 बजे मैनेजिंग डायरेक्टर फैक्ट्री पहुँचा और सब को 2500-2500 रुपये नकद दिये। साहब बोला कि अप्रैल की तनखा के साथ ही 2500 देंगे। साहब यह भी बोला कि मई में ग्रेड देंगे — तब तक कोर्ट से फाइनल हो जायेगा। फिनिशिंग वालों, फेल्डरों, और हैल्परों ने काम बन्द नहीं किया था — उन्हें यह 2500 रुपये नहीं दिये।

✶ **ऋचा एण्ड कम्पनी** (2 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में तनखा अकाउन्ट में 4-5 तारीख को भेजते थे जिसे 8-10-12 तारीख कर दिया। मार्च की तनखा बैंक खातों में नहीं पहुँचने पर ढाई हजार मजदूरों ने 13 अप्रैल को फैक्ट्री में काम बन्द कर दिया। उत्पादन बन्द हुये दो घण्टे भी नहीं हुये थे कि तनखा पहुँच गई।

✶ **गौरव इन्टरनेशनल** (208 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में इन्चार्ज और प्रोडक्शन मैनेजर फिर गाली देने लगे थे। टेलरों ने साहबों को 20 अप्रैल को पेल दिया।

हरियाणा सरकार

केन्द्र सरकार की संस्था के मँहगाई आँकड़ों के अनुसार श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार वर्ष में 1 जनवरी और 1 जुलाई को मजदूरों के लिये मँहगाई भत्ता (डी ए) की घोषणा करता है। हरियाणा सरकार ने 1 जुलाई 2017 से लागू होने वाले मँहगाई भत्ते की घोषणा की ही नहीं। इधर 1 जनवरी 2018 से मजदूरों को देय मँहगाई भत्ते की घोषणा हरियाणा सरकार ने 6 मई 2018 तक नहीं की थी।

ईमेल : मुख्य मन्त्री, हरियाणा < cm@hry.nic.in>
श्रम आयुक्त, हरियाणा < labourcommissioner@hry.nic.in>

✶ उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2018 से 30 सितम्बर 2018 के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक — 7613 रुपये
अर्ध-कुशल श्रमिक — 8375 रुपये
कुशल श्रमिक — 9381 रुपये

उत्तर प्रदेश श्रम विभाग की इन्टरनेट साइट <www.uplabour.gov.in>
ईमेल : मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश <cmup@nic.in>
श्रम आयुक्त, उत्तर प्रदेश <labourcom@nic.in>

✶ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2018 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक — 13, 896 रुपये (8 घण्टे के 534 रुपये)
अर्ध-कुशल श्रमिक —15,296 रुपये (8 घण्टे के 588 रुपये)
कुशल श्रमिक — 16,858 रुपये (8 घण्टे के 648 रुपये)
स्टाफ में दसवीं से कम — 15,296 रुपये (8 घण्टे के 588 रुपये)
स्टाफ में दसवीं पास — 16,858 रुपये (8 घण्टे के 648 रुपये)
स्टाफ में स्नातक और अधिक — 18,338 रुपये (8 घण्टे के 705 रुपये)

ईमेल : मुख्य मन्त्री, दिल्ली < cmdelhi@nic.in>
श्रम विभाग दिल्ली < labjlc2.delhi@nic.in >
श्रम आयुक्त दिल्ली < labcom@nic.in >

✶ ई एस आई और पी एफ की ईमेल

ई एस आई महानिदेशक < dir-gen@esic.nic.in >
केन्द्रीय भविष्यनिधि आयुक्त < cpfc@epfindia.gov.in >
चीफ विजिलैन्स पी एफ < cvo@epfindia.gov.in >

टैबलेट के खराब हो जाने के कारण व्हाट्सएप वाले कई आदान-प्रदान हमें उपलब्ध नहीं रहे हैं। फिर से मैसेज भेजें।

साझेदारी

✶ आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— बुधवार, 30 मई को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास मंगलवार, 29 मई को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— वीरवार, 31 मई को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में मई में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782
ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

मजदूर समाचार में योगदान

- ✶ अपने कदम और अपने साथियों के कदमों की जानकारियाँ सामुहिक करें।
- ✶ चर्चाओं में योगदान के लिये बाँटने वालों से प्रतियाँ ले जायें।
- ✶ फुर्सत मिले तो किसी भी रविवार को मजदूर लाइब्रेरी में आ कर विस्तार से जीवन चर्चा करें।
- ✶ आर्थिक सहयोग का मन हो तो जरूर दें। ज्यादा से ज्यादा छपने की क्षमता वाद-विवाद को फैलायेगी। इस योगदान में कोई भी राशि कम नहीं है।
- ✶ व्हाट्सएप पर खुल कर मैसेज भेजिये, हम जम कर पढ रहे हैं और बातों को फैला रहे हैं।
- ✶ आज मजदूर समाचार के पाठक अखबार में कविता, फलसफा, दर्शन, साहित्य और ज्ञान-चर्चा के विभिन्न रूप का आनन्द ले रहे हैं। आनन्द को उल्लास में बदलिये।

कम्लेन्ट की भाषा को जाने दो ... (पेज दो का शेष)

✶ **एन टी एफ** (49 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 20 परमानेन्ट मजदूर और 500 टेम्परेरी वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक ठेकेदार कम्पनी तनखा में गड़बड़ी करती है और पी एफ की अधिकतर राशि जमा नहीं करती — 5 वर्ष की नौकरी पर वरकर को फण्ड के 15,000 रुपये ही मिले।

✶ **परेश मैती आर्ट** (ए-262 ओखला फेज-2, दिल्ली) गोदाम में नोएडा में फैक्ट्री से ताम्बा-पीतल की ढली और पॉलिश की हुई कई टन तक की कलाकृतियाँ आती हैं। बहुत बड़ा धन्धा है, कला क्षेत्र में नामी है। और यहाँ काम करते सफाईकर्मियों तथा सुरक्षाकर्मियों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता।

✶ **एस जी एस टेक्नीक** (174 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 450 टेम्परेरी वरकर साढे बारह-साढे बारह घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। तनखा से ई एस आई तथा पी एफ के पैसे काटते हैं लेकिन पी एफ नम्बर गलत बताते हैं — नेट पर चेक करते हैं तो मिलता नहीं। एक-डेढ साल बाद छोड़ने पर जिन मजदूरों ने ज्यादा शिकायतें की उन 20-30 को ही 7-8 महीने की भाग-दौड़ के बाद फण्ड के पैसे मिले हैं।

मई दिवस के बहाने

फरीदाबाद में पहली मई को जे सी बी, यामाहा, एस्कोर्ट्स (एच एम एस यूनियन) फैक्ट्रियों में सामान्य उत्पादन कार्य हुआ। एक एस्कोर्ट्स परमानेन्ट मजदूर : '' काहे की छुट्टी ! ड्युटी करो और रोटी खाओ।'' बोनी पोलीमर्स (सीटू यूनियन) फैक्ट्री के परमानेन्ट मजदूर : ''गेट मीटिंग थी। एक घण्टा नेताओं ने भाषण दिये। फिर ड्युटी। जुलूस नहीं। छुट्टी नहीं।'' ब्रॉन लैबोरेटरीज (एटक यूनियन) दवाई फैक्ट्री पहली मई को चली। गुडईयर टायर (इन्टक यूनियन) फैक्ट्री में पहली मई को सामान्य उत्पादन। व्हर्लपूल (स्वतन्त्र यूनियन) फ्रिज फैक्ट्री पहली मई को चली। कटलर हैमर, वॉयथ, ग्लोब कैपेसिटर, शिवालिक प्रिन्ट्स लिमिटेड, इण्डो ऑटोटेक, ईको कैट, सुपर ऑटो इलेक्ट्रिक, पी आई सी एल, लखानी अरमान ग्रुप, अल्फा टोयो, सुपर फैशन, शोवा, प्राइम पोलीमर्स, पाँच भाई साबुन, टाटा स्टील, विकास फोरजिंग, सिद्धवाल रेफ्रिजिरेशन, वी जी इन्डस्ट्रीयल, बी एस एल कास्टिंग, शाही गारमेन्ट्स, हरियाणा ग्लोबल, फरीदाबाद ऑटो, सीट्ज टैक्नोलॉजी, प्रैसमैक ऑटो, ओरियन्ट फैन, ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स, सेन्डेन विकास, श्याम टैक्स, गोपाल सन्स, भारत मशीन टूल्स, नेफा, पीएम्प्रो गारमेन्ट्स, स्ट्ड्स हेल्मेट, सेबरोस, रिक्की प्लास्टिक्स, ब्राइट ब्रादर्स.... फैक्ट्रियों में पहली मई को सामान्य उत्पादन कार्य हुआ। इक्की-दुक्की फ्रैन्ड्स ऑटो कमानी जैसी फैक्ट्री भी रही जहाँ रविवार, 29 अप्रैल को ड्युटी करवा ली गई और बदले में पहली मई को छुट्टी कर दी। औद्योगिक नगर फरीदाबाद की हजारों फैक्ट्रियों में मजदूरों के लिये पहली मई अन्य दिनों के ही समान थी। हाँ, साँय 5 बजे कुछ सरकारी तथा अर्ध-सरकारी कर्मचारी सभा में शामिल हुये जहाँ लीडरों ने मई दिवस की महिमा गा-गा कर सुनाई।

कारण

एक मजदूर बस्ती में पान-सिगरेट, किराना, बाल काटने की दुकानों के बाद पहले परिवार में:

पिता ओखला में फैक्ट्री में काम करते हैं। बड़ा बेटा फरीदाबाद में फैक्ट्री में लगा है। छोटा बेटा नोएडा में निर्माण-स्थलों पर इलेक्ट्रिशियन है। बेटी और दामाद फैक्ट्री वरकर हैं। माँ दो पैसों के लिये घर पर पीस रेट का काम आदि करती रही हैं। तीन छोटे बच्चे हैं। अवकाश के दिन बेटे बिजली उपकरणों की मरम्मत आदि करते हैं।

मोबाइल फोन की छोटी दुकान की बगल में दूसरे परिवार में :

पिता फैक्ट्री वरकर हैं। बड़ा बेटा एम एस सी करने के बाद बेरोजगार। फैक्ट्री में हैल्पर भी लगा। इधर थोड़े-से स्थान पर फोटोकॉपी, कम्प्युटर-इन्टरनेट से बिजली बिल आदि भरने का काम करता है। छोटा बेटा अस्पताल में फार्मासिस्ट लगा है। माँ कुछ समय से गाँव में खेती करने और मकान बनाने में लगी हैं।

बगल में तीसरे परिवार में :

पिता लाँग डिस्टैन्स ट्रक ड्राइवर हैं। दोनों बेटे फैक्ट्री वरकर हैं। बेटी की कुछ वर्ष पहले शादी कर दी। माँ गृहिणी हैं।

चौथे परिवार में :

पिता आर एम पी डॉक्टर लेकिन वर्षों से प्रैक्टिस नहीं कर रहे और दो पैसों के लिये अन्य काम करते हैं। तीनों बेटे फैक्ट्रियों में काम करते हैं। माँ गृहिणी हैं।

औद्योगिक क्षेत्रों में यह व्यापक है। और, 12 घण्टे की ड्युटी भी व्यापक है।

छोटे होते आये परिवार का कार्य दिवस 26-40 घण्टे बन गया है। और नेता दहाड़ते हैं : संघर्षों के बल पर हम ने आठ घण्टे का कार्यदिवस हासिल किया है।

एक कहानी

लीडरों ने घोषणा की : ''दिल्ली चलो !'' समूह का हुँकारा। लाठी-झण्डों के साथ मार्च आरम्भ।

दिशा दिल्ली की बजाय मथुरा की देख कुछ ने खुसर-पुसर की। साथ चल रहों ने डाँट-डपट कर उन्हें चुप करा दिया।

मोर्चा बल्लभगढ के बाद जे सी बी चौक पार कर पलवल की दिशा में बढता चला तो किनारा कर इधर-उधर से निकलने वालों की सँख्या तेजी से बढने लगी।

जो सिर पर कफन बाँधे थे वो मोर्चा के पलवल पहुँच जाने पर भी डटे थे। बहुत गहरी बात है। कमजोर लोग छोड़ गये हैं। कुर्बानी के बिना कुछ हासिल नहीं होता।

मोर्चा होडल पहुँच गया। '' फुद्दु बना रहे हैं नेता'' कह कर बलिदानी जत्था हट गया।

आस्था वाले, चमत्कार की आस वाले थके-हारे चलते रहे। मोर्चा के मथुरा की सीमा में भूतेश्वर के निकट पहुँचने पर आस्थावान भी भाग्य को फिर कोस कर निकल लिये।

भूतेश्वर में परचम गाड़ कर लीडरों ने घोषणा की : '' दिल्ली पहुँच गये !!''

मथुरा को पवित्र नगरी घोषित कर भूतेश्वर में अनुष्ठानों का सिलसिला आरम्भ। विशेष दिनों में कीर्तन, मई दिवस को कीर्तन।

और एकता के झण्डाबरदार पन्थ में विभाजन : एक से तीन से पन्द्रह से पच्चीस पन्थ बने। प्रत्येक एकमात्र क्रान्तिकारी और बाकी सब ढोंगी। विशेषज्ञों के धाराप्रवाह प्रवचन लेकिन फिर भी हर धड़े में भक्तजन तेजी से घटने लगे।

ऐसे में अकेले-अकेलों के प्रहसन का स्थान संयुक्त परिषद के प्रहसनों ने लिया। और 1987 आते-आते संयुक्त तौर पर भी शोभा-यात्रा और कीर्तन सम्भव नहीं रहे। ऐसे में मई दिवस पर सेमिनारों-गोष्ठियों में पापाचार के बढने को कोसा जाने लगा। अर्थवाद-उपभोक्तावाद के कूँये में चेतना डूब गई।

कई बातें, कई कहानियाँ

✶ ताऊ ने यादें ताजा की। फैक्ट्री में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट थी — 8 से 4, 4 से 12, 12 से 8। आठ घण्टे की शिफ्ट में ही लन्च-ब्रेक, दो टी-ब्रेक, पानी-पेशाब के लिये समय थे। कोई भी मैनेजर इन समयों में किसी वरकर को टोकने की हिम्मत नहीं करता था। विभागों में और पूरी फैक्ट्री में मजदूरों के अपने इन समयों में खूब बातें होती थी।

इलेक्ट्रोप्लेटिंग डिपार्ट में चेन सिस्टम था। कार्यस्थल पर नियन्त्रण के लिये शिफ्ट वरकर आपस में खूब तालमेल रखते थे। सुपरवाइजर से मजदूर अकेले-दुकेले बात नहीं करते थे। हर मसले पर डिपार्ट के सब वरकर सुपरवाइजर के चारों तरफ खड़े हो कर कई ढँग से बोलते थे। एक बहुत गम्भीर हो कर बात करता तो दूसरा गुस्से से बोलता, एक मजाक करता तो दूसरा इधर-उधर की बात करने लगता, पीछे से कोई न कोई सुपरवाइजर के उँगली करता रहता। सुपरवाइजर दब कर रहता था और बीच-बीच में खुद भी प्रोडक्शन में लग जाता था। ऊपर से मैनेजरों और नीचे से मजदूरों के दबाव ने सुपरवाइजर को बी पी का, रक्त चाप का मरीज बना दिया था।

✶ सफलता का गुरुज्ञान साम, दाम, दण्ड, भेद है। गुरु के निर्देशन में जोड़-तोड़, तिकड़मबाजी, षडयन्त्र, खूनखराबे में युवा अव्वल रहा। युवा सम्राट बना।

महल। सेवक-सेविकायें। बॉडीगार्ड। राजसी ठाठ-बाट।

और, राजा बनने के लिय जो करम युवा ने किये थे वही राजा बने रहने के लिये जारी रखने पड़े। नींद में भी चैन नहीं। रोज कमरा बदल कर सोना। पुरुष पहरेदारों की जगह स्त्री पहरेदार रखना। युवा की इस सब से, साम-दाम-दण्ड-भेद से घिन बढने लगी।

एक दिन युवा सम्राट पैदल महल से बाहर निकला। नौकर-चाकर छोड़े। सुरक्षाकर्मी छोड़े। राजसी ठाठ-बाट छोड़ा। चल पड़ा।

उत्तर भारत में बिहार में पाटलीपुत्र से युवा ने चलना आरम्भ किया था। चलता रहा। नदी-नाले, दुर्गम जंगल, पहाड़ पार कर चलता रहा। दक्षिण भारत में कर्नाटक में चन्द्रगिरी पर्वत पर पहुँचा।

चन्द्रगिरी पर्वत पर मन की पीड़ा से पार पाने के लिये अन्न-जल छोड़ कर आत्महत्या की। उस समय उनकी आयु 42 वर्ष थी।

सफलता के गुरुज्ञान को आहूति अर्पित।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।